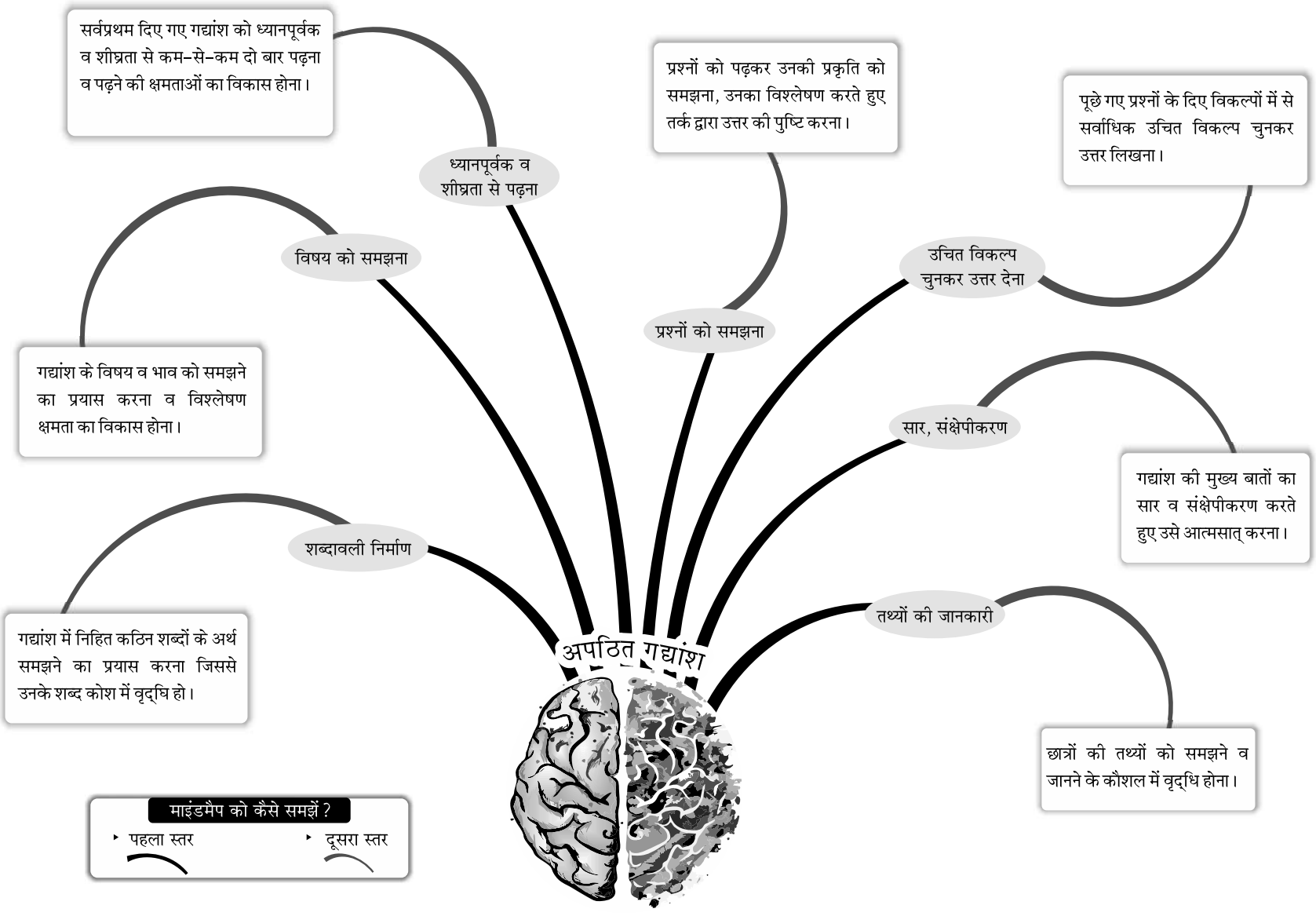
अपठित गद्यांश
ध्यानपूर्वक व शीघ्रता से पढ़ना
सर्वप्रथम दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक व शीघ्रता से कम-से-कम दो बार पढ़ना व पढ़ने की क्षमताओं का विकास होना।
विषय को समझना
गद्यांश के विषय व भाव को समझने का प्रयास करना व विश्लेषण क्षमता का विकास होना।
शब्दावली निर्माण
गद्यांश में निहित कठिन शब्दों के अर्थ समझने का प्रयास करना जिससे उनके शब्द कोश में वृद्धि हो।
प्रश्नों को समझना
प्रश्नों को पढ़कर उनकी प्रकृति को समझना, उनका विश्लेषण करते हुए तर्क द्वारा उत्तर की पुष्टि करना।
उचित विकल्प चुनकर उत्तर देना
पूछे गए प्रश्नों के दिए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित विकल्प चुनकर उत्तर लिखना।
सार, संक्षेपीकरण
गद्यांश की मुख्य बातों का सार व संक्षेपीकरण करते हुए उसे आत्मसात् करना।
तथ्यों की जानकारी
छात्रों की तथ्यों को समझने व जानने के कौशल में वृद्धि होना।
माइंडमैप को कैसे समझें?
पहला स्तर
दूसरा स्तर

व्यावहारिक व्याकरण

पदबंध

- संज्ञा पदबंध
  घर के आगे लगा पेड़ गिर गया।
  आसमान में तारे चमक रहे हैं।
- सर्वनाम पदबंध
  मेरे बचपन का साथी मोहित डॉक्टर है।
  बिजली-सी फुर्ती दिखाकर आपने घोड़ा पकड़ लिया।
- विशेषण पदबंध
  तेज़ चलने वाली गाड़ियाँ प्राय: देर से पहुँचती हैं।
  मोहन बहुत आज्ञाकारी और विनम्र है।
- क्रिया पदबंध
  सुरेश नदी में नहा रहा है।
  खिड़की को खोला नहीं जा सकता।
- क्रिया-विशेषण पदबंध
  अपने बच्चों के साथ वह चला गया।
  सुबह से शाम तक वह खड़ा रहा।

मुहावरे

- ऐसे वाक्यांश जो सामान्य अर्थ की प्रतीति न कराकर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं।

रचना के आधार पर वाक्य रूपान्तरण

- सरल वाक्य (एक कर्ता व एक क्रिया से बना वाक्य)
- संयुक्त वाक्य (और, किन्तु, इसलिए, तथा, व, क्योंकि आदि योजक शब्दों के प्रयोग से जुड़े दो वाक्य)
- मिश्रवाक्य (कि, जो, जिसने, जब-तब, या जैसे-जैसे, ज्यों ही, जब भी आदि योजक शब्दों के मेल से बने वाक्य)

समास

- अव्ययीभाव समास
  प्रतिदिन, यथाशक्ति
- तत्पुरुष समास
  विद्यालय, राजपुत्र
- द्वंद्व समास
  माता-पिता, दिन-रात
- कर्मधारय समास
  नीलकमल, मुखचन्द्र
- द्विगु समास
  नवरत्न, त्रिफला
- बहुव्रीहि समास
  गजानन, वीणापाणि

माइंडमैप को कैसे समझें ?

- पहला स्तर
- दूसरा स्तर

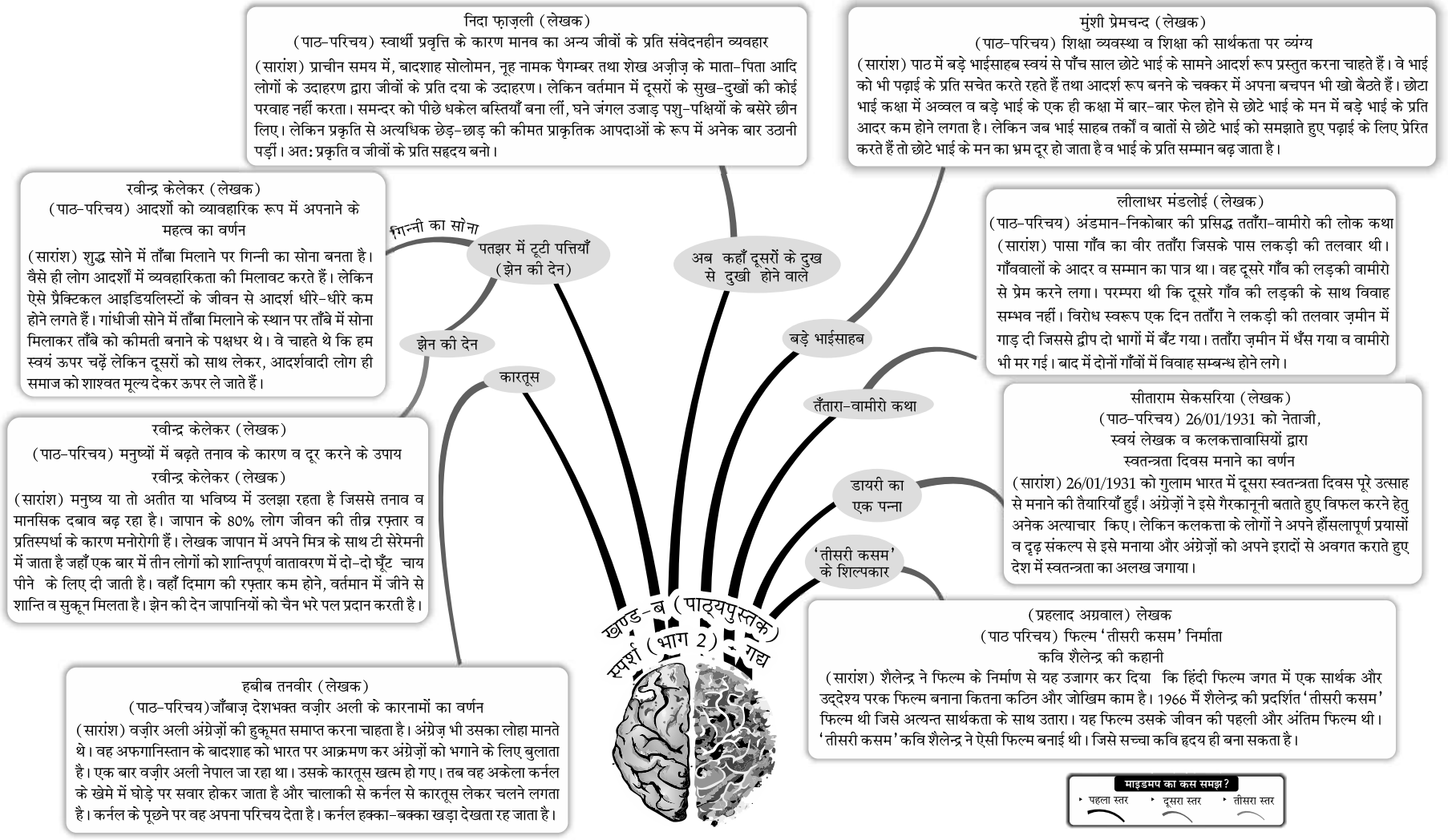

खण्ड-ब (पाठ्यपुस्तक) स्पर्श (भाग 2) - गद्य

बड़े भाईसाहब

मुंशी प्रेमचन्द (लेखक)

(पाठ-परिचय) शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा की सार्थकता पर व्यंग्य

(सारांश) पाठ में बड़े भाईसाहब स्वयं से पाँच साल छोटे भाई के सामने आदर्श रूप प्रस्तुत करना चाहते हैं। वे भाई को भी पढ़ाई के प्रति सचेत करते रहते हैं तथा आदर्श रूप बनने के चक्कर में अपना बचपन भी खो बैठते हैं। छोटा भाई कक्षा में अव्वल व बड़े भाई के एक ही कक्षा में बार-बार फेल होने से छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति आदर कम होने लगता है। लेकिन जब भाई साहब तर्कों व बातों से छोटे भाई को समझाते हुए पढ़ाई के लिए प्रेरित करते हैं तो छोटे भाई के मन का भ्रम दूर हो जाता है व भाई के प्रति सम्मान बढ़ जाता है।

तँतारा-वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई (लेखक)

(पाठ-परिचय) अंडमान-निकोबार की प्रसिद्ध तताँरा-वामीरो की लोक कथा

(सारांश) पासा गाँव का वीर तताँरा जिसके पास लकड़ी की तलवार थी। गाँववालों के आदर व सम्मान का पात्र था। वह दूसरे गाँव की लड़की वामीरो से प्रेम करने लगा। परम्परा थी कि दूसरे गाँव की लड़की के साथ विवाह सम्भव नहीं। विरोध स्वरूप एक दिन तताँरा ने लकड़ी की तलवार ज़मीन में गाड़ दी जिससे द्वीप दो भागों में बँट गया। तताँरा ज़मीन में धँस गया व वामीरो भी मर गई। बाद में दोनों गाँवों में विवाह सम्बन्ध होने लगे।

डायरी का एक पन्ना

सीताराम सेकसरिया (लेखक)

(पाठ-परिचय) 26/01/1931 को नेताजी, स्वयं लेखक व कलकत्तावासियों द्वारा स्वतन्त्रता दिवस मनाने का वर्णन

(सारांश) 26/01/1931 को गुलाम भारत में दूसरा स्वतन्त्रता दिवस पूरे उत्साह से मनाने की तैयारियाँ हुईं। अंग्रेज़ों ने इसे गैरकानूनी बताते हुए विफल करने हेतु अनेक अत्याचार किए। लेकिन कलकत्ता के लोगों ने अपने हौंसलापूर्ण प्रयासों व दृढ़ संकल्प से इसे मनाया और अंग्रेज़ों को अपने इरादों से अवगत कराते हुए देश में स्वतन्त्रता का अलख जगाया।

'तीसरी कसम' के शिल्पकार

(प्रहलाद अग्रवाल) लेखक

(पाठ परिचय) फिल्म 'तीसरी कसम' निर्माता कवि शैलेन्द्र की कहानी

(सारांश) शैलेन्द्र ने फिल्म के निर्माण से यह उजागर कर दिया कि हिंदी फिल्म जगत में एक सार्थक और उद्देश्य परक फिल्म बनाना कितना कठिन और जोखिम काम है। 1966 में शैलेन्द्र की प्रदर्शित 'तीसरी कसम' फिल्म थी जिसे अत्यन्त सार्थकता के साथ उतारा। यह फिल्म उसके जीवन की पहली और अंतिम फिल्म थी। 'तीसरी कसम' कवि शैलेन्द्र ने ऐसी फिल्म बनाई थी। जिसे सच्चा कवि हृदय ही बना सकता है।

अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले

निदा फ़ाज़ली (लेखक)

(पाठ-परिचय) स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मानव का अन्य जीवों के प्रति संवेदनहीन व्यवहार

(सारांश) प्राचीन समय में, बादशाह सोलोमन, नूह नामक पैगम्बर तथा शेख अज़ीज़ के माता-पिता आदि लोगों के उदाहरण द्वारा जीवों के प्रति दया के उदाहरण। लेकिन वर्तमान में दूसरों के सुख-दुखों की कोई परवाह नहीं करता। समन्दर को पीछे धकेल बस्तियाँ बना लीं, घने जंगल उजाड़ पशु-पक्षियों के बसेरे छीन लिए। लेकिन प्रकृति से अत्यधिक छेड़-छाड़ की कीमत प्राकृतिक आपदाओं के रूप में अनेक बार उठानी पड़ीं। अत: प्रकृति व जीवों के प्रति सहृदय बनो।

पतझर में टूटी पत्तियाँ (झेन की देन)

गिन्नी का सोना

रवीन्द्र केलेकर (लेखक)

(पाठ-परिचय) आदर्शों को व्यावहारिक रूप में अपनाने के महत्व का वर्णन

(सारांश) शुद्ध सोने में ताँबा मिलाने पर गिन्नी का सोना बनता है। वैसे ही लोग आदर्शों में व्यवहारिकता की मिलावट करते हैं। लेकिन ऐसे प्रैक्टिकल आइडियलिस्टों के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे कम होने लगते हैं। गांधीजी सोने में ताँबा मिलाने के स्थान पर ताँबे में सोना मिलाकर ताँबे को कीमती बनाने के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि हम स्वयं ऊपर चढ़ें लेकिन दूसरों को साथ लेकर, आदर्शवादी लोग ही समाज को शाश्वत मूल्य देकर ऊपर ले जाते हैं।

झेन की देन

रवीन्द्र केलेकर (लेखक)

(पाठ-परिचय) मनुष्यों में बढ़ते तनाव के कारण व दूर करने के उपाय

रवीन्द्र केलेकर (लेखक)

(सारांश) मनुष्य या तो अतीत या भविष्य में उलझा रहता है जिससे तनाव व मानसिक दबाव बढ़ रहा है। जापान के 80% लोग जीवन की तीव्र रफ़्तार व प्रतिस्पर्धा के कारण मनोरोगी हैं। लेखक जापान में अपने मित्र के साथ टी सेरेमनी में जाता है जहाँ एक बार में तीन लोगों को शान्तिपूर्ण वातावरण में दो-दो घूँट चाय पीने के लिए दी जाती है। वहाँ दिमाग की रफ़्तार कम होने, वर्तमान में जीने से शान्ति व सुकून मिलता है। झेन की देन जापानियों को चैन भरे पल प्रदान करती है।

कारतूस

हबीब तनवीर (लेखक)

(पाठ-परिचय) जाँबाज़ देशभक्त वज़ीर अली के कारनामों का वर्णन

(सारांश) वज़ीर अली अंग्रेज़ों की हुकूमत समाप्त करना चाहता है। अंग्रेज़ भी उसका लोहा मानते थे। वह अफगानिस्तान के बादशाह को भारत पर आक्रमण कर अंग्रेज़ों को भगाने के लिए बुलाता है। एक बार वज़ीर अली नेपाल जा रहा था। उसके कारतूस खत्म हो गए। तब वह अकेला कर्नल के खेमे में घोड़े पर सवार होकर जाता है और चालाकी से कर्नल से कारतूस लेकर चलने लगता है। कर्नल के पूछने पर वह अपना परिचय देता है। कर्नल हक्का-बक्का खड़ा देखता रह जाता है।

माइंडमप का कस समझ?

- पहला स्तर
- दूसरा स्तर
- तीसरा स्तर

कर चले हम फ़िदा

कैफ़ी आज़मी (कवि)

कविता परिचय—सैनिकों के बलिदान की गौरव गाथा

सारांश—युद्ध में अपने-अपने प्राणों का बलिदान देता, सैनिक अन्य साथियों से भी देश रक्षा हेतु कुर्बान होने का आह्वान करता है। देश पर आए संकटों का सामना करने हेतु तत्पर रहने व भारत माता की रक्षा करने हेतु वह समस्त देशवासियों को प्रेरणा देता है और उन्हें उनके कर्त्तव्यों का स्मरण कराता है।

आत्मत्राण

रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कवि)

कविता परिचय—आत्मबल व पुरुषार्थ करने हेतु प्रेरित करना

सारांश—कविता में कवि प्रार्थना करता है कि प्रभु आप मुझे संकट से मत बचाओ वरन् मुझमें उनका सामना करने की शक्ति दो। सहायक न मिलने पर भी मेरा बल न हिले। मुश्किलों में मैं हार न मानूँ। मैं सुख में भी आपकी याद करूँ और दु:ख में भी, मेरी आस्था आपके प्रति कभी कम न हो।

साखी

कबीर (कवि)

कविता परिचय—दैनिक जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की अभिव्यक्ति

सारांश—कबीर ने पाठ में मधुर वचनों के महत्व, मानव प्रवृत्ति, आलोचकों का महत्व, आत्मज्ञान, अहंकार के त्याग, सांसारिक सुखों के त्याग, प्राणी मात्र के प्रति प्रेम आदि के माध्यम से जनसामान्य को सीख दी है।

मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त (कवि)

कविता परिचय—परोपकार, दया, उदारता आदि मानवीय गुणों का महत्त्व बताना

सारांश—मनुष्य को अपना जीवन दूसरों की भलाई में लगाना चाहिए क्योंकि स्वयं के लिए जीना पशुप्रवृत्ति है। रंतिदेव, दधीचि, उशीनर आदि के उदाहरण से त्याग का महत्त्व बताया है। मृत्यु से डरे बिना गौरवपूर्ण मृत्यु का वरण करना चाहिए। सब ईश्वर की सन्तान हैं। अत: आपसी मेल-जोल व सहायता द्वारा जीवन में आगे बढ़ें। ऐसे व्यक्ति की सहायता हेतु देवता भी तत्पर रहते हैं।

पद

मीरा (कवयित्री)

कविता परिचय—अपने प्रभु श्रीकृष्ण से प्रार्थना

सारांश—पहले पद में मीरा श्रीकृष्ण से द्रोपदी, प्रहलाद, ऐरावत हाथी के उदाहरणों द्वारा अपनी पीड़ा दूर करने का आग्रह करती हैं। दूसरे में वे प्रभु की सेविका बन उनके लिए बाग़ बनाने, दासी के कार्य करने और प्रभु के दर्शन पाने की अभिलाषा व्यक्त करती हैं।

तोप

वीरेन डंगवाल (कवि)

कविता परिचय—सन् 1857 की तोप पर आधारित

सारांश—कम्पनी बाग़ में रखी भयंकर तोप जिसने सन् 1857 में क्रान्तिकारियों पर बहुत कहर ढाया, को वर्ष में दो बार चमकाया जाता है। अब वह बदहाल स्थिति में है। बच्चे, चिड़िया आदि उस पर बैठते हैं और वह केवल खिलौना मात्र बनकर रह गई है। कोई तोप चाहे कितनी भी शक्तिशाली हो, एक दिन उसका मुँह अवश्य बन्द होता है।

पर्वत प्रदेश में पावस

सुमित्रानन्दन पन्त (कवि)

कविता परिचय—वर्षा ऋतु में पर्वतीय सौन्दर्य का मानवीकरण

सारांश—कवि ने वर्षाकाल में पल-पल परिवर्तित प्रकृति का वर्णन किया है। पर्वत पर खिले हज़ारों फूलों को उनकी आँखें, तालाब के पानी का दर्पण, झरनों से झरते पानी को मोतियों की लड़ियाँ, पेड़ों को मन की आकांक्षाएँ बताया है। वर्षाकाल में पर्वत पंख फैला आसमान में उड़ता प्रतीत होता है। साल के वृक्ष भय से धरती में धँसे और तालाब के जल में आग लगी प्रतीत हो रही है।

माइंडमैप को कैसे समझें ?

- पहला स्तर
- दूसरा स्तर

गुरु दयाल सिंह (लेखक) मुख्य पात्र—पी.टी. मास्टर, हैडमास्टरजी, लेखक

पाठ-परिचय—लेखक द्वारा अपने विद्यार्थी जीवन के समय की यादों का वर्णन

सारांश—बचपन में लेखक व उसके साथी दिनभर मौज-मस्ती करते। स्कूल और पढ़ाई कैद के समान लगती। गर्मियों की पूरी छुट्टियाँ ननिहाल में लाड़-प्यार व मस्ती में बीततीं। विद्यालय में पी. टी. मास्टर प्रीतमचन्द कठोर व अनुशासनप्रिय थे। उनके द्वारा बच्चों को नीली-पीली झंडियों द्वारा स्काउटिंग का अभ्यास कराया जाना व उनसे मिली शाबाशी छात्रों के लिए फौज के मेडल जैसी लगना। गाँव में नौटंकी के जरिए फौज में भर्ती होने के लिए आकर्षित करना। धन की कमी के चलते लेखक द्वारा पुरानी पुस्तकों से पढ़ाई। नई पुस्तकें पढ़ने की ललक होना। प्रीतमचन्द द्वारा विद्यालय में छात्रों को कठोर दण्ड देने पर हैडमास्टर साहब द्वारा उन्हें निलम्बित करना। अपने घर पर प्रीतमचन्द (पी. टी. मास्टर) का तोतों को बादाम छीलकर खिलाना, सहृदयपूर्ण व्यवहार, आश्चर्यजनक।

राही मासूम रज़ा (लेखक)

मुख्य पात्र—टोपी, इफ़्फ़न, इफ़्फ़न व टोपी की दादी

पाठ-परिचय—अलग-अलग धर्मों के होने पर भी टोपी-इफ़्फ़न के बीच सामाजिक समरसता व बाल मनोविज्ञान का ज्ञान

सारांश—टोपी और इफ़्फ़न में गहरी मित्रता थी। इफ़्फ़न की दादी, टोपी और इफ़्फ़न दोनों से बहुत प्यार करतीं। टोपी को अपनी दादी से बिल्कुल लगाव नहीं था। टोपी द्वारा अपनी माँ को अम्मी कहने पर उसकी दादी ने बहुत हंगामा किया और माँ से उसकी पिटाई करवाई। टोपी का भाई मुन्नी बाबू भी उसे बहुत परेशान करता। इफ़्फ़न की दादी के मरने व इफ़्फ़न के पिता का तबादला होने पर टोपी बिल्कुल अकेला हो गया। इफ़्फ़न के परिवार के जाने के बाद नए कलेक्टर साहब के बच्चों से टोपी की दोस्ती नहीं हो पाई वरन् उन्होंने टोपी को कुत्तों से कटवा दिया। ऐसे में घर की नौकरानी ने टोपी का दुःख समझ उसे अपनत्व दिया। दूसरी तरफ एक ही कक्षा में दो बार फेल होने पर टोपी को कक्षा में भी शर्मिन्दा होना पड़ता लेकिन तीसरी बार वह आखिर में (पिता के चुनाव हार जाने पर) जैसे-तैसे पास हो गया।

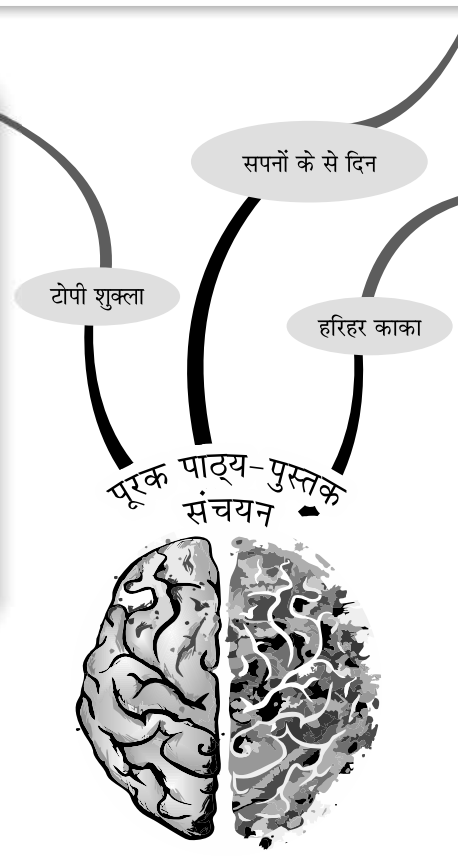

मिथिलेश्वर (लेखक)

मुख्य पात्र-हरिहर काका,
महंत, हरिहर काका के भाई, लेखक
परिवार व धर्म की आड़ में पोषित

पाठ-परिचय—धन के लालच में पारिवारिक सम्बन्धों को महत्त्व न देना

सारांश—वृद्ध व निःसन्तान हरिहर काका की पंद्रह बीघे ज़मीन के लालच में तीनों भाइयों द्वारा अपनी पत्नियों व बेटों को हरिहर काका की सेवा के निर्देश लेकिन घरवालों द्वारा उपेक्षित होने पर ठाकुरबारी के महंत द्वारा काका की ज़मीन के लालच में शुरू में उनकी आवभगत, ना मानने पर हत्या का प्रयास। भाइयों द्वारा पुलिस बुलाकर काका को ठाकुरबारी से आज़ाद कराना। अब भाइयों द्वारा ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के प्रयास में हरिहर काका पर जुल्म ढाया जाना। पुलिस द्वारा मुक्त कराना। अन्त में परिवार से अलग पुलिस की निगरानी में रहना तथा मानसिक तनाव से गूँगेपन का शिकार होना। दयनीय स्थिति।

माइंडमैप को कैसे समझें ?

- पहला स्तर
- दूसरा स्तर

लेखन
सूचना लेखन
उद्देश्य की स्पष्टता
सरल वाक्यों का प्रयोग
स्पष्ट शीर्षक
संक्षिप्तता
औपचारिक शैली
संक्षिप्त जानकारी
वर्तनी की शुद्धता
उपयोगी सम्पर्क सूत्र के साथ सम्प्रेषण
विज्ञापन लेख़न
विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख
आकर्षक लेखन शैली
प्रस्तुति में नवीनता, मौलिकता
वर्तमान से जुड़ाव
नारे (स्लोगन) का प्रयोग
भाषाई शुद्धता
दूसरों से भिन्नता
ई-मेल लेखन
सुरक्षित सन्देश समय की
बचत बड़ी संख्या में लोगों को
आसानी से सन्देश भेजा जा सकता है।
कागज़ का उपयोग कम करके पर्यावरण
को बचाने में मदद मिलती है।
लघु कथा
विषय-वस्तु का निश्चय
पात्रों का विकास
कथा शैली
भूतकाल का प्रयोग
क्रमबद्धता
स्वाभाविक विकास
रोचकता, कल्पनाशीलता
उपयुक्त शीर्षक
शिक्षाप्रद
अनुच्छेद लेखन
विषय-वस्तु का निश्चय
स्वयं के विचार
सीमित आकार
पूर्णता
समासिकता
क्रमबद्धता
विषय केन्द्रित
पत्र-लेखन (औपचारिक)
प्रभावी एवं स्पष्ट
सरल और बोलचाल की भाषा शैली
सुलझे और क्रमबद्ध विचार
आवश्यक तथ्यों का समावेश
सार्थक सुझाव
विनम्रता सूचक शब्दों का प्रयोग
माइंडमैप को कैसे समझें ?
पहला स्तर
दूसरा स्तर